संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X
UGC Approved

शोध दिशा

51

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका
UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 51 | अक्टूबर-दिसंबर 2020 | 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ॰ मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन॰सी॰आर॰
डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार 09557746346
डॉ॰ कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 में मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

सिक्ख इतिहासकारी के गुरुमुखी स्रोत एवं प्रणालियाँ/ गुरमिन्द्र सिंह 154
आधुनिकबोध एवं समकालीन हिंदी कहानियाँ/ डॉ॰ शंकर ए॰ राठोड 162
मानवतावाद से भौतिकतावाद की तरफ अग्रसर समाज एवं बालजीवन/
विकास कुमार सिंह 167
छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्र में खाद्यान्न संकट का अध्ययन/
गजानन कटरे, डॉ॰ एस॰ किस्सपोट्टा 171
नन्हे दर्शकों पर टीवी कार्टून के प्रभाव/ राखी गौरवम 177
नारी-उत्पीड़न का यथार्थ : आज बाजार बंद है/ डॉ॰ संजय गडपायले 180
लोकनाटकों के प्रमुख रूप/ चुन्नन कुमारी 184
रजनी मोरवाल की कहानियों में समकालीन युगबोध/ नेहा साव 189
हाशिए पर वृद्धा ग्रामीण स्त्री : दूरी (धारावाहिक) के संदर्भ में/ पीतांबरी 196
नासिरा शर्मा कृत उपन्यास कुइयांजान : जल का अतीत एवं वर्तमान स्वरूप/
संतरा मीणा उर्फ संतरा कुमारी मीणा 201
जयदेव का जीवन और साहित्य/ अमरकुमार चौधरी 206
मार्क्सवादी चिंतन और डॉ॰ शिवकुमार मिश्र/ दीपेश यादव 213
डॉ॰ पूर्वा शर्मा के हाइकु : प्रकृति प्रीत के नन्हे गीत/ डॉ॰ हसमुख परमार 221
स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी के रूप/
डॉ॰ नीलू अग्रवाल 227
अध्ययनशील व्यक्तित्व : राजर्षि शाहू महाराज/ वाढेकर रामेश्वर महादेव 234
धूमिल के काव्य में कथ्य और शिल्प का अंतर्संबंध/ शशिभूषण प्रसाद 238
भूख और मौत का रिपोर्ट/ डॉ॰ श्रवण कुमार गुप्ता 244
आधुनिक काव्य की बढ़ती गद्यात्मकता : कुछ विचार/ डॉ॰ वरुण कुमार 254
गांधीयुगीन पत्रकारिता और उसकी प्रासंगिकता/ डॉ॰ वीरेंद्र कुमार शर्मा 267
मधुकर गंगाधर का कथासाहित्य/ सजन कुमार 279
मानव-सभ्यता के विकास में परिवार की अवधारणा और मन्नू भंडारी/
सुनीता कुमारी 287
शेखर के विद्रोह का स्वरूप/ डॉ॰ शोभा कौर 294
तुलसीदास के साहित्य में भारतीय संस्कृति एवं हिंदीभाषा का अनुशीलन/
डॉ॰ मधु शर्मा 300
हिंदी कहानी-परंपरा और अज्ञेय/ कु॰ रिंकी 307
हानूश में प्रतिरोध का स्वर/ सोनम सिंह, डॉ॰ दामोदर मिश्र 312
भारतीय नाट्यकला के प्राचीन नाट्याचार्य : एक अध्ययन/ कृष्णकुमार 316
जीवन के अंतिम पड़ाव की यथार्थ कथा : समय सरगम/
डॉ॰ अशोक शामराव मराठे 321

ISSN 0975-735X

शेखर के विद्रोह का स्वरूप

डॉ॰ शोभा कौर
असिस्टेंट प्रोफेसर
किरोड़ीमल महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

'शेखर' मूलत: विद्रोह का आख्यान है 'किंतु प्रश्न उठता है कि इस विद्रोह की प्रवृत्ति क्या है? क्या यह विद्रोह उस रोमांटिक प्रवृत्ति से अलग है जिसका रूप छायावादी काव्य में दिखाई देता है? क्या यह विद्रोह केवल व्यक्तिगत धरातल पर है या उसका कोई सामाजिक सरोकार भी है? क्या शेखर का विद्रोह में क्रांति का रूप लिपटा है या व्यक्तिमन में ही धुआँ-धुआँ सुलगता है? विद्रोह की यह चिंगारियाँ शेखर के व्यक्तित्वांतरण में सक्षम हो पाती हैं या दार्शनिक चिंतन में बुझ जाती हैं? क्या यह विद्रोह व्यक्तिगत धरातल तक इकहरा है या समाज की जटिलताओं के तंतुओं में बुना-गुथा एक मानसिक इंद्रजाल है? इन्हीं प्रश्नों की तहों को सुलझाते हुए हमें शेखर के विद्रोह का स्वरूप स्पष्ट हो पाएगा।

'शेखर' के आरंभ में लेखक मानकर चलता है कि 'इस जीवन में भी कुछ है, एक ताप, एक उत्ताप, एक ऊर्ध्वगामी दीप्ति, जो यदि विद्रोह की शक्ति नहीं, तो विद्रोह शक्ति की उपासना सामर्थ्य अवश्य है'। शेखर के आरंभ में ही लेखक यह स्पष्ट संकेत देते हैं कि यह विद्रोह परंपरागत ढंग का रोमांटिक प्रवृत्ति का विद्रोह नहीं है जो बहुत उबाल में बड़े सपने और बड़े वादों की राजनीति में जल्दी निष्क्रिय हो जाता है। शेखर के विद्रोह की प्रकृति सामान्यत: रोमांटिक प्रकार की है, पर उसमें राग के अतिरेक से अलग होने की चेष्टा भी दिखाई देती है। स्वयं अज्ञेय कहते हैं, 'मैं उस दिन की कल्पना करता हूँ कि जिस दिन हमारे देश के, हमारे संसार के क्रांतिकारी खाने वाले व्यक्तियों में ऐसी प्रखर किंतु शीतल बौद्धिक घृणा जागेगी...क्योंकि विद्रोह अनंत है, नित्य है, क्योंकि उसके उपकरणों में, प्रेम के बाद सबसे बड़ा और सबसे अमोघ अस्त्र है यही बौद्धिक घृणा।"

शेखर के विद्रोह को समझने से पूर्व अज्ञेय के व्यक्ति, समाज और संस्थान के प्रति व्यक्त विचारों को समझना आवश्यक है क्योंकि तभी समझ आ सकता है कि अंतत: विद्रोह किसका, किससे और क्यों होता है? व्यक्ति का सबसे बड़ा गुण है–स्वतंत्रता, आत्मसजगता तथा मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था। समाज का गठन मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए हुआ था तथा व्यक्ति का जीवन सुचारू रूप से चल सके इसीलिए समाज में संगठनों का जन्म हुआ, किंतु जब यही समाज और संगठन मनुष्य के व्यक्तित्व को लील जाएँ और उसकी अस्मिता को कुचलने पर उतारू हो जाएँ तो विरोध की प्रवृत्ति विद्रोह में बदल जाती है और विद्रोह एक व्यापक रूप में क्रांति को जन्म देता है।

व्यक्ति, समाज और संस्था के अंतर्संबंधों की जटिलताओं की समझ ही विरोध, विद्रोह

ISSN 0975-735X